"स्त्री"

डॉ. मनोज कुमार सतीजा
सहायक प्रोफेसर (हिंदी), जानकी देवी मेमोरियल महाविद्यालय।

स्त्री-स्त्री
स्त्री देवी है, माता लक्ष्मी है
सरस्वती है, गीता है, भारती है
माँ है, बेटी है बहन है
भाभी है और बीवी है

स्त्री-स्त्री
संतान है सखी है सहेली है
सजनी है सास है और सौतन भी है

स्त्री-स्त्री
उपासना है पूजा है आरती है
अर्चना है वंदना है साधना है भावना है
श्रद्धा है और संस्कार भी है

स्त्री-स्त्री
पंचतत्वों का संगम है
वो अग्नि है पवन है भूमि है
गंगा है और आकाश की गरिमा भी है

स्त्री-स्त्री
स्वाति है सुनीता है सरिता है रोशनी है प्राची है
निहारिका है संध्या है निशा है पूनम है
और चांदनी भी है

स्त्री-स्त्री
श्रद्धा है सुमन है कुसुम है लतिका है
रंगोली है कुमकुम है शोभा है
ज्योति है और ज्योत्सना भी है

स्त्री-स्त्री
अनुभूति है कल्पना है कविता है रचना है
प्रतिभा है करिश्मा है कीर्ति है और किताब भी है

स्त्री-स्त्री
प्रेम है प्रीति है कशिश है
मीना है मनोरमा है प्रेमिका है
प्रिया है प्रियंका है आकांक्षा है
मोहिनी है मेनका है माया है
मीनाक्षी है और साक्षी भी है

स्त्री-स्त्री
सीता है राधा है पार्वती है काली है
नीलम है निधि है और कनिका भी है

स्त्री-स्त्री
रेखा है राखी है राशि है रक्षा है
संगीता है सम्भावना है सीमा है
सुदर्शन है और सुधा भी है

स्त्री-स्त्री
कोठे पर रोने वाली करुणा है
पुरुष के शोषण की संवेदना है
कुंठित मानसिकता की वेदना है
कड़वे बोल सुनकर भी
करवा का व्रत रखने वाली
अद्भुत कल्पना है

स्त्री-स्त्री
ताड़ित होकर भी दूध देने वाली सेवा है
पीड़ित होकर भी प्यार बाँटने वाली प्रेरणा है
और दुत्कारी जाने पर भी दया बाँटने वाली सुशीला है

स्त्री-स्त्री
सेवा है समर्पण है संयम है साहस है
संघर्ष है सुखों और समझौतों का अद्भुत संगम है

स्त्री-स्त्री
प्रेम का सागर है ममता का आंचल है
शंका का समाधान है और
महत्वाकांक्षाओं का अम्बार है

स्त्री-स्त्री
समय के साथ चलने वाली
सात फेरों सात वचनों व सात जन्मों का साथ है
स्त्री है तो जीवन जीना आसान है

स्त्री-स्त्री
टूटते हुए पुरुष का सम्बल और साहस है
सड़क से लेकर संसद तक पहुंचने वाली आवाज है

और अन्तरात्मा से लेकर अंतरिक्ष तक फैली
शक्ति का अहसास है

स्त्री-स्त्री
ससुराल की शान है मायके की आन है
स्त्री से सजा ये संसार है
सौभाग्यशाली हैं हम जो इसकी संतान है

इसलिए
स्त्री के हर रूप का गुणगान करें सम्मान करें
वासना से नहीं उपासना से
सृष्टि की इस रचना का ध्यान करें
बलात्कार से नहीं आदर सत्कार से
समाज में इसका सम्मान करें।